IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अकबर और औरंगजेब की धार्मिक नीति का तुलनात्मक अध्ययन

अमन
असिस्टेंट प्रोफेसर,इतिहास
सनातन धर्म कॉलेज, पानीपत

चारु
असिस्टेंट प्रोफेसर,इतिहास
आई.बी.(पी.जी.)कॉलेज,पानीपत

सारांश

मुगल साम्राज्य का भारत के इतिहास में एक महत्तवपूर्ण स्थान रहा है मुगल साम्राज्य का कालक्रम मुख्य रूप से 1526 से लेकर 1707 तक रहा है दिए गए शोध पत्र में अकबर और औरंगजेब की धार्मिक नीतियाँ उनके कारणों और उनके प्रभाव पर चर्चा की गई है इस शोध पत्र में बताया गया है कि किस प्रकार अकबर की कुशल एवं उदार धार्मिक नीति ने हिंदू मुस्लिम एकता का संदेश दिया और एक स्थिर साम्राज्य की स्थापना करी जबकी दूसरी और औरंगजेब की कट्टर धार्मिक नीति के कारण उसके समय में विद्रोह हुए और उसके साम्राज्य का पतन हुआ।

मुख्य शब्द: जजिया, इबादत खाना, दीन इलाही,धर्मांतरण,इस्लामी कट्टरता,धार्मिक सहिष्णुता, मुगल साम्राज्य।

परिचय मुगल साम्राज्य का इतिहास काफी समृद्ध और शक्तिशाली रहा है प्रत्येक मुगल शासक की धार्मिक नीति ने समाज और प्रशासन पर गहरा प्रभाव डाला। अकबर (1556-1605) और औरंगज़ेब (1658-1707) दो प्रमुख मुगल सम्राट थे, जिनकी धार्मिक नीतियाँ एक-दूसरे से काफी भिन्न थीं।जहां अकबर की धार्मिक नीति ने सहिष्णुता और भाईचारे का परिचय दिया वहीं औरंगजेब की धार्मिक नीति शरीयत के कानून पर आधारित थी।

अकबर की धार्मिक उदारता के कारण

1 भक्ति सूफ़ी आन्दोलनों का प्रभाव

मध्यकालीन भारत में समाज में फैली बुराइयों को दूर करने के लिए भक्ति व सूफी आंदोलन की शुरुआत हुई जिसमें कुछ प्रमुख भक्ति संतो कबीर दास, तुलसीदास, मीराबाई ,दादू दयाल आदि प्रमुख थे वही कुछ सूफी संत में चिश्ती संप्रदाय और सुहरावर्दी संप्रदाय प्रमुख थे।

2 हिंदू पत्नी से विवाह

अकबर ने एक राजपूत स्त्री जोधा बाई से विवाह किया और उसके धार्मिक विचारों का भी गहरा प्रभाव पड़ा।

3 अकबर का व्यक्तित्व

मुगल सम्राट अकबर अनपढ़ था लेकिन फिर भी उसके अंदर सच को जानने की जिज्ञासा थी और अकबर का व्यक्तित्व भी उसकी उदार धार्मिक नीति का कारण बनता है।

4 भारत में बहुसंख्यक हिंदू
भारत में हिंदू धर्म को मानने वाले लोगों की जनसंख्या ज्यादा थी व अकबर यह समझ गया था कि अगर भारत के ऊपर शासन करना है तो हिंदुओं को साथ लेकर चलना होगा,अकबर उनकी सहनुभूति हासिल करना चाहता था।

5 शेख सलीम चिश्ती का प्रभाव

अबुल फजल के अनुसर अकबर कई बार सूफी संत शेख सलीम चिश्ती के पास गया था अकबर को सलीम नाम के पुत्र की प्राप्ति भी उनकी कृपा से हुई थी इस प्रकार इतिहासकार मानते हैं कि अकबर की धार्मिक नीति के पीछे वह भी एक कारण रहें होंगे।

अकबर की धार्मिक नीति

1 तीर्थ यात्रा कर और जजिया कर की समाप्ति:

जजिया कर गैर मुसलमानों से लिया जाने वाला एक धार्मिक कर था अकबर ने 1564 में इस कर को खत्म किआ व 1563 में उसने तीर्थ यात्रा कर को समाप्त किया। भारत में जजिया कर की शुरुआत सर्वप्रथम मोहम्मद बिन कासिम के द्वार की गई थी।

2 इबादत खाने की स्थापना:

1575 में अकबर के द्वारे इबादत खाने की स्थापना की गई। शुरुआत में अकबर ने इसे सिर्फ मुस्लिम विदवानों के लिए खोला था अकबर को लगा था कि जब मुस्लिम उलेमा अर्थाथ विद्वान आपस में धर्म को लेकर चर्चा करेंगे तो अकबर को भी कुछ जानने को मिलेगा लेकिन कुछ समय के बाद में वे आपस में लड़ने लगे इसलिए बाद में अकबर ने इसे अन्या धर्मों के लोगों के लिए भी खोल दिया।

3 दीन ए इलाही:

तोहिद ए इलाही या दिन ए इलाही जिसका अर्थ होता है देवी एकेश्वरवाद।अकबर ने 1582 में इसकी स्थापना करी। इस्मे अकबर ने सभी मतों का समन्वय करने का प्रयास किया। इतिहासकार स्मिथ का यह विचार है कि अकबर ने दिन ए इलाही के बाद इस्लाम धर्म को त्याग दिया था। डॉ. राय चौधरी के अनुसार दिन ए इलाही कोई धर्म नहीं था क्योंकि इसमें कोई भगवान नहीं था और पूजा का कोई स्थान नहीं था। अकबर के इस नए मत को सिर्फ कुछ ही लोगों ने अपनाया था क्योंकि अकबर ने इसका कोई प्रचार प्रसार नहीं किया था अकबर के मरने के बाद इस नए मत का अंत हो गया इसे अपनाने वाला एकमात्र हिंदू महेश दास था जिसे अकबर ने बीरबल की उपाधि प्रदान की थी।

4 महजर की घोषणा:

अकबर ने 1579 में महजर की घोषणा की इसके तहत अकबर ने उलेमाओं के द्वार इस्तेमाल किये जाने वाले अधिकारों को अपने अधीन कर लिया।सैयद ए रिज़वी के अनुसार महजर का उद्देश्य उन सभी विषयों को जो अकबर की हिंदू मुस्लिम प्रजा से संबंधित थे बादशाह के प्रत्यक्ष नियंत्रण में लाना था।

5 सुलह-ए-कुल की नीति:

अकबर ने धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई, जिसे सुलह-ए-कुल (सार्वभौमिक शांति) कहा जाता है। इस नीति के अंतर्गत सभी धर्मों को समान दृष्टि से देखा गया और किसी भी संप्रदाय के साथ भेदभाव नहीं किया गया। इस नीति का उद्देश्य साम्राज्य में स्थिरता बनाए रखना था।

6 हिंदू मुस्लिम संबंधों को मजबूत करना:

अकबर ने राजपूत राजकुमारियों से विवाह किया और उन्हें अपने धर्म का पालन करने की स्वतंत्रता प्रदान की और अकबर ने अपने प्रशासन में हिंदू सरदारों को शामिल किया, जिनमें बीरबल, मानसिंह,टोडरमल आदि प्रमुख थे।

7 धार्मिक संस्थाओं को संरक्षण

अकबर ने हिंदू मंदिरों, सिख गुरुद्वारों और जैन धर्मस्थलों को संरक्षण दिया। उन्होंने ईसाई मिशनरियों को भी अपने दरबार में स्थान दिया और उनसे बाइबल का अध्ययन किया।

औरंगज़ेब की धार्मिक नीति

1 शरीयत का कड़ाई से पालन

औरंगज़ेब ने इस्लामी कानूनों को सख्ती से लागू किया और प्रशासनिक नीतियों को शरीयत के अनुसार संचालित किया।

2 जज़िया कर की पुनर्स्थापना

1679 में औरंगज़ेब ने जज़िया कर पुनः लागू किया, जिससे हिंदू और अन्य गैर-मुस्लिम समुदायों में असंतोष बढ़ा।1680 में औरंगजेब ने पुर्तगालियों से भी जजिया कर वसूला औरंगजेब के द्वारा जजिया कर की तीन श्रेणियां बनाई गई थी जिसके अनुसर 41,24,12 दिरहम 1 साल में चुकाने होते थे एक दिरहम 25 पैसे के बराबर होता था एक हिसाब से एक साल का सबसे ज्यादा कर किसी व्यक्ति के लिए 10.25 पैसे बराबर होता था एक प्रकार से देखा जाए तो यह कर ज्यादा नहीं था लेकिन औरंगजेब के द्वारे उसे वसुलने का तरिका यह लोगों को अपमानित करता था इतिहासकार सतीश चंद्र के अनुसार औरंगजेब का यह निर्णय शरीयत का कडाई से पालन करने की भावना का परिणाम नहीं था बल्की यह ऊस समय के राजनीतिक संकट के परिणाम स्वरुप लिया गया था जिसका पहला कारण था दक्कन में बढ़ती मराठा शक्ति वह राजपूत शक्ति का विस्तार वह इने सब से निपटने के लिए अत्याधिक धन की अवश्यकता थी।

3 मंदिरों और धार्मिक स्थलों पर प्रतिबंध

औरंगज़ेब ने कई हिंदू मंदिरों को नष्ट कर दिया, जिनमें काशी विश्वनाथ मंदिर और मथुरा का केशवदेव मंदिर प्रमुख थे।इतिहासकारों का ये मनाना है कि मंदिरों को तोड़ना औरंगजेब की प्रतिशोध की भावना के कारण ऐसा हुआ माना जाता है क्योंकि औरंगजेब के खिलाफ जो विद्रोह हुए उसमें मंदिर षड़यंत्र का केंद्र होते थे इतिहासकार सतीश चंद्र के अनुसार औरंगजेब के द्वार मंदिरों को तोड़े जाने के साक्ष्य बहुत ही कम मात्रा में मिलते हैं

4 संगीत और कला पर प्रतिबंध:

उन्होंने संगीत और अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों पर प्रतिबंध लगा दिया, जो अकबर के विपरीत नीति थी। औरंगजेब के इस कार्य से जितने भी व्यक्ति संगीत और कला के क्षेत्र में थे। वै सभी बेरोजगार हो गए औरंगजेब के ऐसा करने का कारण यह था कि वह कट्टर सुन्नी मुसलमान था और इस्लाम के अनुसार चलना चाहता था इस्लाम के अनुसर गाना बजाना व संगीत नृत्य यह सभी हराम थे।

5 गैर-मुसलमानों की प्रशासन में भूमिका कम करना:

औरंगज़ेब ने हिंदू अधिकारियों को उच्च पदों से हटाना शुरू किया, जिससे हिंदू-मुस्लिम संबंधों में तनाव बढ़ा।हलांकी विरोधाभास स्वरूप सबसे ज्यादा हिंदू उसी के प्रशासन में थे।अतहर अली ने यह सिद्ध किया है कि अकबर के समय मनसबदार की संख्या 22.5% थी, जबकी औरंगजेब के जमाने में यह संख्या बढ़कर 33.1% हो गई।

6 धर्मांतरण:

इतिहासकार जदुन्नाथ सरकार के अनुसर औरंगजेब हिंदुओं का बलपूर्व धर्मांतरण करवाने का पक्षपाती थे।इतिहासकार सतीश चंद्र जदुन्नाथ सरकार के इस कथन का विरोध करते हैं कि इसका अब तक कोई प्रमाण नहीं मिला है सतीश चंद्र के अनुसर धर्म बदलने वाले व्यक्ति या तो जमींदार थे या छोटे-मोटे राजकिये अधिकारी थे ऐसे लोगों का उदेश्य बस यह होता था कि उनकी नौकरी पक्की हो जाए या उन्हें जमींदार बना दिया जाए,उन्हें सरकारी पदों पर मुसलमानों के साथ प्रतिस्पर्धा करने में प्रथमिकता मिल जाए।

विषय	**अकबर**	**औरेंगजेब**
जजिया	1564 में जजिया कर समापत किया	1679 में जजिया कर फिर से लगाया
हिन्दू मुस्लिम सम्बंध	हिंदूओं को अपने प्रशासन में उच्च पद दिए, राजपूतों से वैवाहिक संबंध स्थापित किए	मंदिरों को तोड़ा व हिंदुओं के त्योहारों पर प्रतिबन्ध लगाए
धार्मिक चर्चा	इबादत खाने की स्थापना व विभिन्न धर्मों का सम्मान किया	कट्टर धार्मिक नीति का पालन किया
सांस्कृतिक दृष्टिकोण	कला, संगीत व साहित्य को प्रोत्साहन दिया	संगीत और नृत्य को हराम मानकर उसके ऊपर प्रतिबन्ध लगाया गया
धार्मिक दृष्टिकोण	सहिष्णुता की नीति का पालन किया	इस्लामिक कट्टरता को अपनाना

औरंगजेब की कट्टर धार्मिक नीति के विरोध में तर्क

हम सभी ने यह सुना है कि औरंगजेब एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था, वह अपने साम्राज्य में शरीयत के कानून का पालन करता था।उसके द्वार मंदिरों को नष्ट करना, धर्मांतरण, जजिया कर लगाना यह उसकी धार्मिक नीति थी परंतु कुछ इतिहासकारों के द्वार उसकी कट्टर धार्मिक नीति के विरोध में तर्क दिया गया है जिनमे इतिहासकार सतीश चंद्रा, इरफान हबीब, अतहर अली आदि प्रमुख हैं प्रोफ़ेसर इरफ़ान हबीब के अनुसर औरंगजेब के समय में जो भी विद्रोह हुए जिनमें सतनामियां, मराठा के विद्रोह यह उसकी धार्मिक नीति का परिणाम नहीं था बाल्की यह उस समय के कृषि संकट और दोहरे भू राजस्व का परिणाम था औरंगजेब के द्वारा जजिया कर लगाना धर्मांतरण करवाना या ये भी धार्मिक नीति का परिणाम नहीं था बल्की इसके पीछे भी राजनीतिक संकट और आर्थिक कारण छुपे हुए थे जिसकी चर्चा ऊपर औरंगजेब की धार्मिक नीति में की गई है।

अकबर और औरंगज़ेब की नीतियों का प्रभाव

अकबर की नीतियों का प्रभाव:

1 साम्राज्य स्थिर और समावेशी बना:

अकबर की उदार नीतियाँ के कारण उसने एक स्थिर साम्राज्य की स्थापना की इसलिए वह मुगल साम्राज्य का एक वास्तविक संस्थापक माना जाता है।

2 हिंदू-मुस्लिम संबंध मजबूत हुए:

अकबर की नीतियों के परिणाम स्वरूप हिंदू मुस्लिम संबंधो में मजबूती देखने को मिली अकबर ने 1564 में जजिया कर हटाया जो कि काफिरों से लिया गया था,अकबर ने राजपूतों से वैवाहिक संबंध स्थापित किये,विभिन्न धर्मों के लोगों के लिए उसने इबादत खाने को खोला,अकबर के प्रशासन के अंदर भी एक बहुत बड़ी संख्या हिंदुओं की थी उदाहरण के लिए राजा टोडरमल उसका वित्त मंत्री था और मानसिंह जो उसका सेनापति था

3 आर्थिक और सांस्कृतिक समृद्धि हुई:

अकबर के शासन काल में उसका राज्य आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से भी समृद्धि हासिल करता है।अकबर ने अपने वित्त मंत्री टोडरमल की सहायता से अपनी अर्थ व्यवस्था को मजबूती प्रदान की और एक भू-राजस्व प्रणाली लागू की जिनमे गला बख्शी इसका मतलब है कंकूट प्रणाली व जब्ती प्रणाली और बताई प्रणाली प्रमुख थी अकबर ने इसके द्वारा भूमि की चार श्रेणी बनाई जिनमे पोलज, परोती, छाछर, बंजर, भूमि को इने चार भागो में बंटा गया इन भूमियों में सबसे उपजाऊ भूमि पोलज थी वह सबसे कम उपजाऊ भूमि बंजर थी इने भूमियों के अनुसार ही हर व्यक्ति से अलग-अलग कर लिया जाता था अकबर की इस कृषि व्यवस्था में सुधार की बदलाव ही उसकी अर्थव्यवस्था में मजबूती देखने को मिलती है इसके साथ ही अकबर ने मुस्लिम धर्मों के साथ-साथ हिंदू धर्म को भी महत्व दिया और उनके त्यौहारों को भी खुली छूट दी अकबर ने अपने राज्य को एक धर्मनिर्पेक्ष राज्य बनाने का पूर्ण प्रयास किया अकबर के समय में उसके दरबार में हिंदू चित्रकार जिनमें दसवंत और बसावन का नाम प्रमुख है अकबर के समय में स्थापत्य कला के क्षेत्र में भी हिंदू मुस्लिम समन्वय देखने को मिलता है जोकी सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक है।

औरंगज़ेब की नीतियों का प्रभाव:

1 धार्मिक असंतोष और विद्रोह बढ़े:

औरंगजेब की कट्टर धार्मिक नीति के परिणाम स्वरूप उसके साम्राज्य में जाटों,सतनामियों, मराठा के विद्रोह हुए।

2 मराठा, सिख और राजपूतों के विद्रोह हुए:

शुरुआत में राजपूतों से अच्छे संबंध थे, लेकिन बाद में उनके साथ संघर्ष बढ़ गया। खासकर मेवाड़ और मारवाड़ के राजपूतों ने विरोध किया। इसी तरह, शिवाजी और उनके उत्तराधिकारियों ने मराठा साम्राज्य की नींव रखी, जो औरंगज़ेब के लिए सबसे बड़ा खतरा बना। औरंगजेब ने सिखों के नौवें गुरु तेग बहादुर को मौत के घाट उतार दिया क्योंकि उन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार करने से मना कर दिया था इसीलिए सिखों में भी औरंगजेब के खिलाफ आक्रोश पैदा हो गया।

3 साम्राज्य का पतन तेज हो गया:

मुगल साम्राज्य के पतन के लिए अनेक करण जिम्मेदार थे परंतु मुगल साम्राज्य के पतन के पीछे औरंगजेब के हिंदू विरोधी कार्य का महतवपूर्ण योगदान है औरंगजेब ने हिंदुओं के त्योहारों पर आंशिक रूप से प्रतिबन्ध लगाया जैसे सड़क पर होली खेलना, होली के लिए पैसा वह लकड़ी वसुलना इसे बंद करवा दिया गया।1679 में जजिया कर की शुरुआत कर दी,सती प्रथा पर भी उसने निषेध लगा दिया औरंगजेब के इन सब काम से लोग उसके खिलाफ हो गए जो कि मुगल साम्राज्य के पतन का एक करण बना।

4 हिंदू मुस्लिम संबंधों में तनाव:

औरंगजेब के द्वार हिंदू मंदिरों को नष्ट करना उनके त्योहारों पर प्रतिबंध लगाना आदि कारणों से हिंदू मुस्लिम संबंध विच्छेद हो गए।

संदर्भ सूची

1. भारत का वृहत इतिहास (भाग-2) – मजूमदार,राय चौधरी, दत्त

2. Indian History (Medieval India)– B.D.Tuteja And O.P. Verma

3. मध्यकालीन भारत (1540-1761) भाग 2 – हरीशचंद्र वर्मा

4 मुगल भारत –विपिन बिहारी सिन्हा